जंगल मीटिंग

लेखन
प्रमोद कुमार तिवारी

चित्रांकन
श्रेयस रजनीश व्यास

21242 – जंगल मीटिंग

ISBN 978-93-5729-407-2

प्रथम संस्करण

नवंबर 2025 कार्तिक 1947

PD 3T M

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

₹ 35.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा हाई-टेक ग्राफ़िक्स, एफ-28/3, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़-II, नई दिल्ली 110020 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे,
बनाशंकरी III इस्टेज, **बेंगलुरु 560 085** फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन,
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	एम. वी. श्रीनिवासन
मुख्य संपादक	:	बिज्ञान सुतार
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	अमिताभ कुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	:	दीपक जैसवाल
सहायक संपादक	:	मीनाक्षी
उत्पादन सहायक	:	साहित्य शर्मा

लेआउट

मो. नाज़िम

कहानियाँ कहती हैं...!

कहानियाँ जीवन से जुड़े खट्टे-मीठे अनुभव, जीवन जीने का मनोबल और ऐसे विषयों के बारे में सहज रूप में जानकारी देती हैं जिन्हें जानना और समझना बहुत आवश्यक है। डिजिटल दुनिया हो या स्त्री-विमर्श, प्रकृति का संरक्षण हो या आजीविका के साधन, जीवन की चुनौतियों का सामना और समाधान हो या मतदान देने का अधिकार हो— सभी विषय ऐसे हैं जो जीवन को उत्कृष्ट रूप से जीने में सहायता करते हैं। 'महत्वपूर्ण जीवन-कौशल' के विभिन्न विषयों के इर्द-गिर्द बुनी गई सभी कहानियाँ पढ़ने का आनंद देने के साथ-साथ समझ, तर्क, विश्लेषण और उचित निर्णय आदि कुशलताओं का द्वार भी खोलती हैं। आइए, इन्हें पढ़ें, समझें और आगे बढ़ें!

कार्यक्रम समन्वयक— उषा शर्मा, *आचार्य* एवं *प्रभारी*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

मार्गदर्शन— नीना सबनानी, *एनिमेटर* एवं *सहायक संकाय*, डिजाइन विभाग, आई.आई.टी., हैदराबाद

आभार ज्ञापन

परिषद् पुस्तक के निर्माण में सहयोग करने के लिए अक्षय कुमार दीक्षित, मेंटर, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली; श्याम सिंह सुशील, *लेखक* तथा आई.आई.टी. हैदराबाद से प्रसाद एस. ओंकार, *विभाग प्रमुख* एवं *सह-आचार्य*, डिजाइन विभाग; दीपक जॉन मैथ्यू, *आचार्य*; डेवलिन जूड रेमेडियोज, *सहायक आचार्य*; अंकिता रॉय, *सहायक आचार्य*; मोहम्मद शाहिद, *सहायक आचार्य*; सौरव देवरी, *सहायक आचार्य*, डिजाइन विभाग; शुहिता भट्टाचार्जी, *सहायक आचार्य*, लिबरल आर्ट विभाग का आभार व्यक्त करती है।

परिषद् गौतम गोस्वामी, *सहायक आचार्य*, एनिमेशन एवं मल्टीमीडिया विभाग, बी.आई.टी., जयपुर; विभूति पंड्या, *विभाग प्रमुख* एवं *सहायक आचार्य*, एनिमेशन एवं मल्टीमीडिया विभाग, बी.आई.टी., जयपुर; मो. शाह आलम, *वरिष्ठ परामर्शदाता* (आई.सी.टी.), राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; भावना खेड़ा, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली तथा संपादकीय सहयोग के लिए प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के मोहन शर्मा, *सहायक संपादक* (संविदा); राकेश कुमार, *सीनियर प्रूफरीडर*; प्रियंका, *प्रूफरीडर* (संविदा) तथा पुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए सुरेंद्र कुमार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; मनोज कुमार, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) का आभार ज्ञापित करती है।

उल्लास
ULLAS
नव भारत साक्षरता कार्यक्रम
जन जन साक्षर

जंगल मीटिंग

लेखन
प्रमोद कुमार तिवारी

चित्रांकन
श्रेयस रजनीश व्यास

विद्यया ऽ मृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

सुबह से ही चुलबुल चुहिया और बिट्टू गौरैया को साँस लेने की भी फ़ुर्सत नहीं थी। सबके घर जाकर आज होने वाली मीटिंग के बारे में बताने और सादर आमंत्रित करने का काम इन्हें सौंपा गया था।

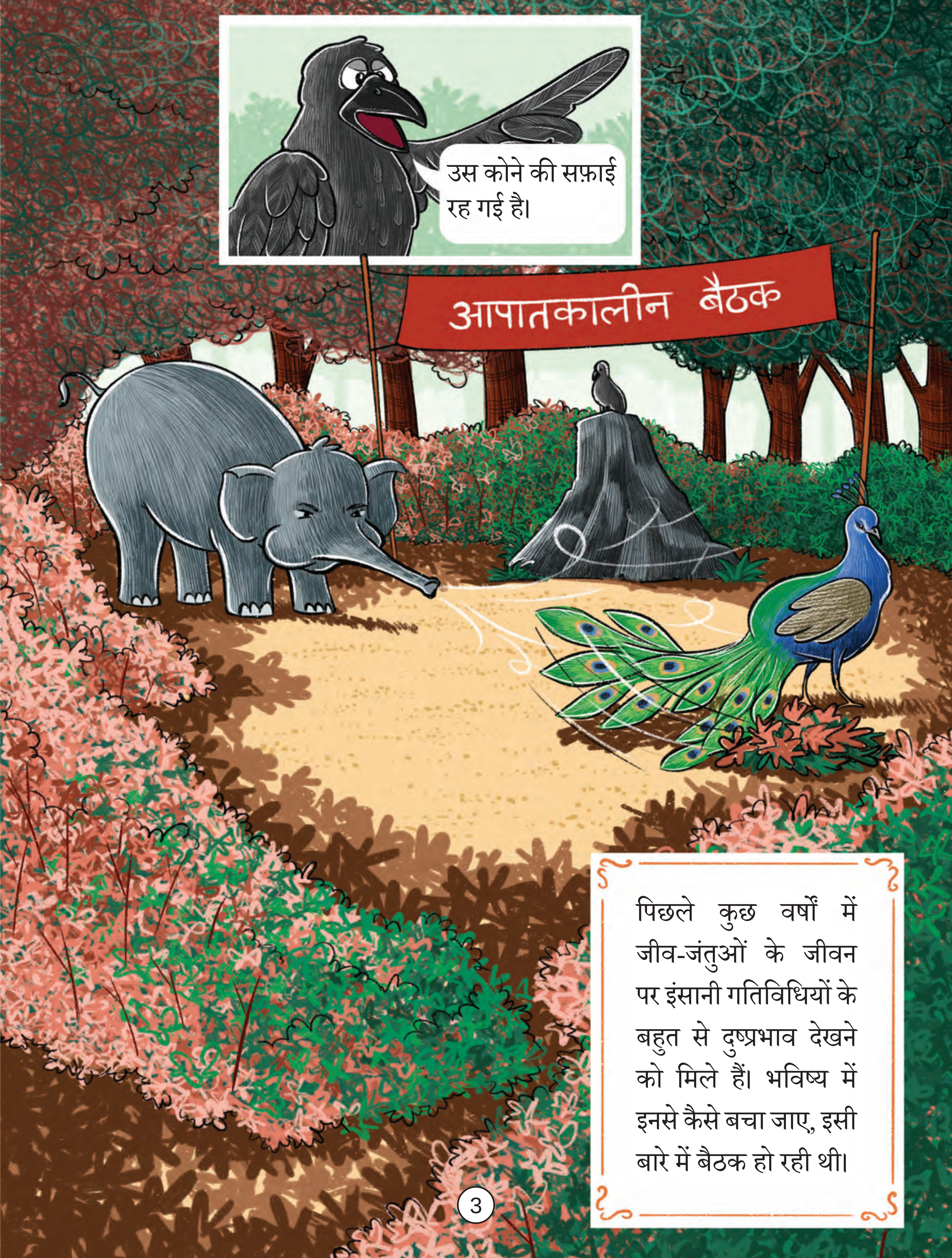

पिछले कुछ वर्षों में जीव-जंतुओं के जीवन पर इंसानी गतिविधियों के बहुत से दुष्प्रभाव देखने को मिले हैं। भविष्य में इनसे कैसे बचा जाए, इसी बारे में बैठक हो रही थी।

मेरी रोशनी क्या इन्हें कम पड़ रही थी?
भइया, चलिए!

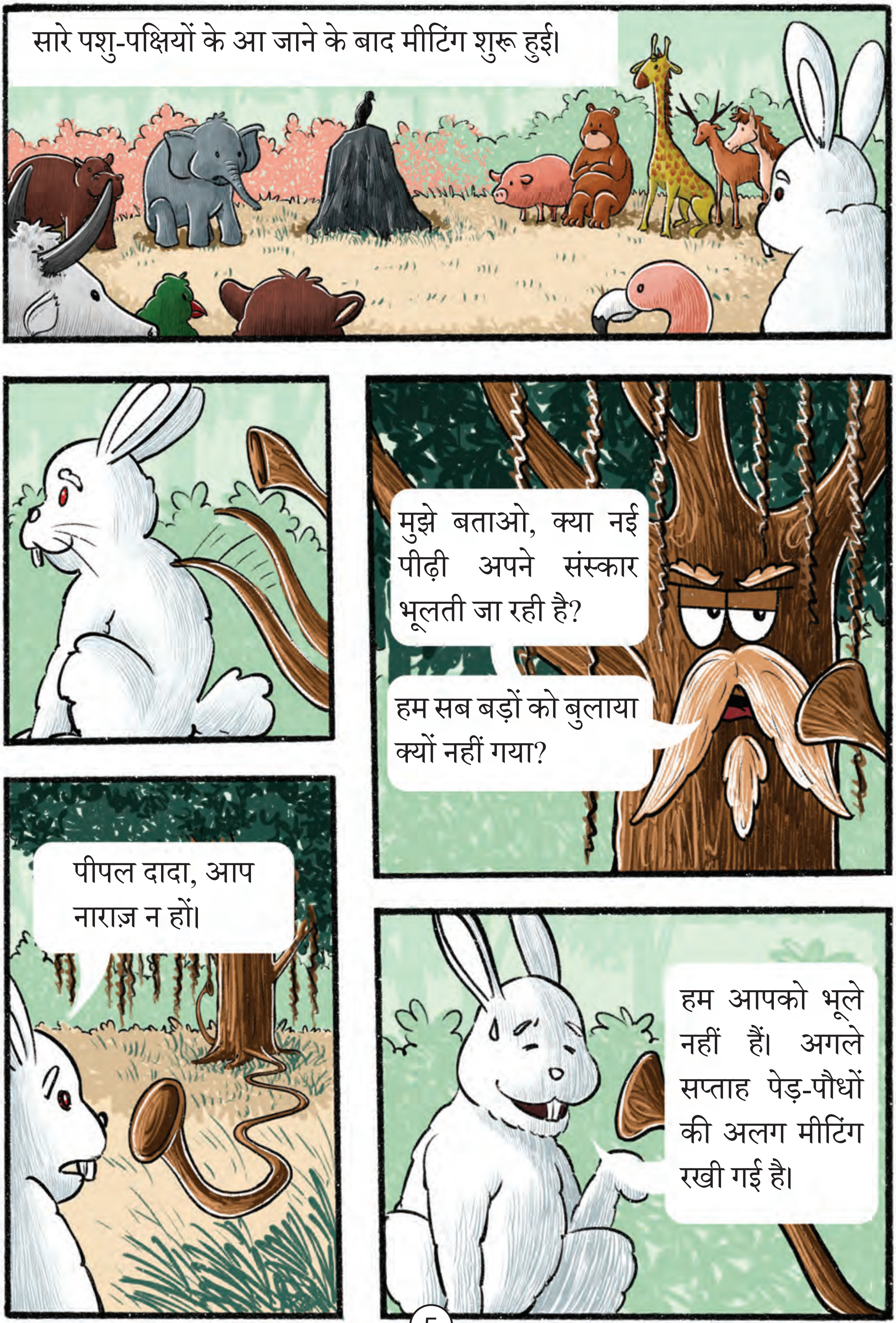
सारे पशु-पक्षियों के आ जाने के बाद मीटिंग शुरू हुई।
मुझे बताओ, क्या नई पीढ़ी अपने संस्कार भूलती जा रही है?
हम सब बड़ों को बुलाया क्यों नहीं गया?
पीपल दादा, आप नाराज़ न हों।
हम आपको भूले नहीं हैं। अगले सप्ताह पेड़-पौधों की अलग मीटिंग रखी गई है।

ये क्या बात हुई भला? जब हम साथ रहकर अपने सुख-दुख बाँटते हैं तो मीटिंग अलग-अलग क्यों?
इंसानों का यह अत्याचार हम पर भी हो रहा है।
हम सब एक साथ मिलकर योजना बनाएँ तो ही वह सफल होगी।
सड़क की ओर वाली मेरी डाल हमेशा मुरझाई रहती है। पेड़-पौधों और जीवों की समस्या एक है।

पीपल दादा सही कह रहे हैं।
पेड़-पौधों को भी इस मीटिंग में शामिल किया जाए।
इनकी बातों को भी एजेंडा में शामिल किया जाए…
…और कार्यवाही को आगे बढ़ाया जाए।
अब मैं मोनू मोर से निवेदन करूँगा कि वह हमें सारी समस्याओं के बारे में बताएँ।

एक-एक करके मोनू मोर ने सब समस्याओं को सबके सामने रखा।

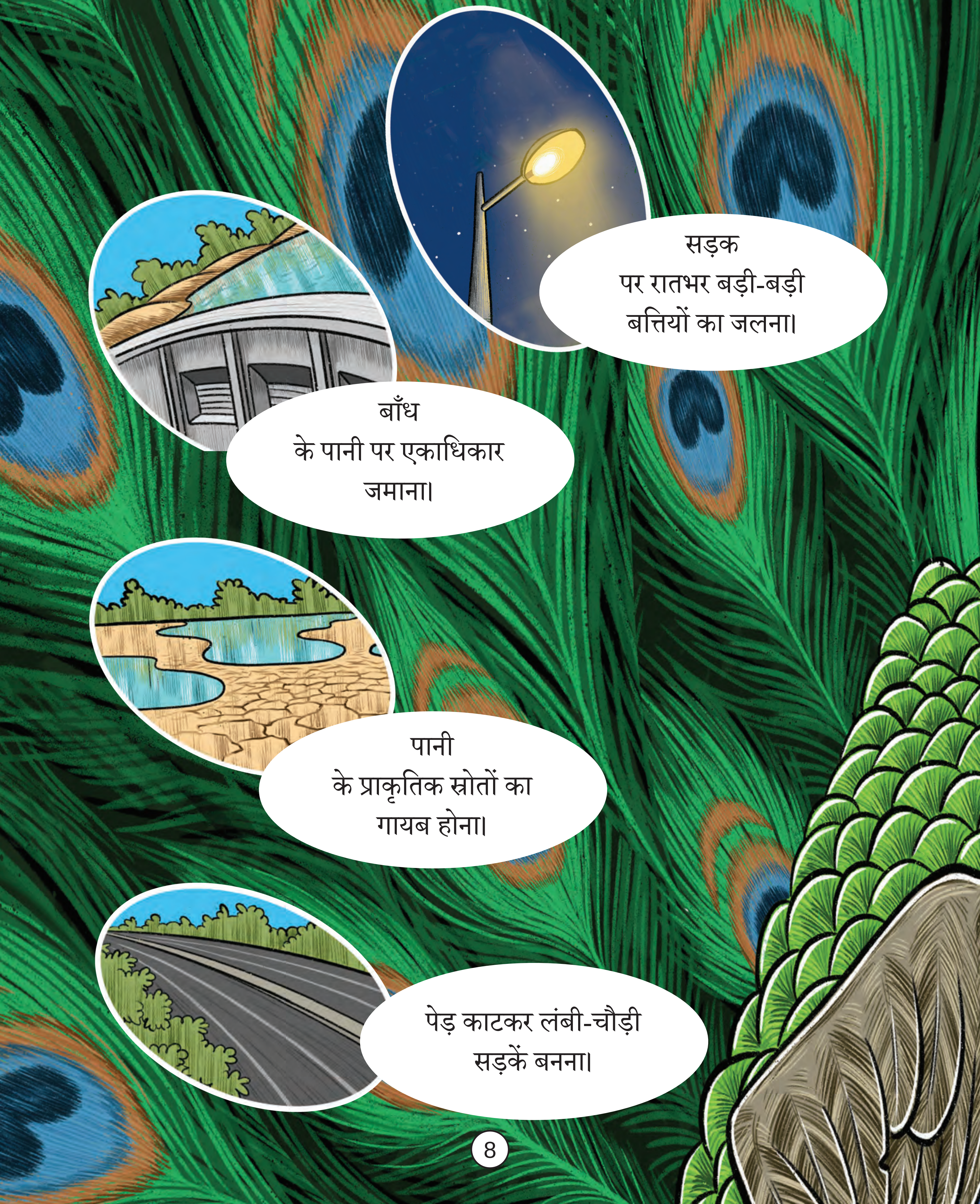

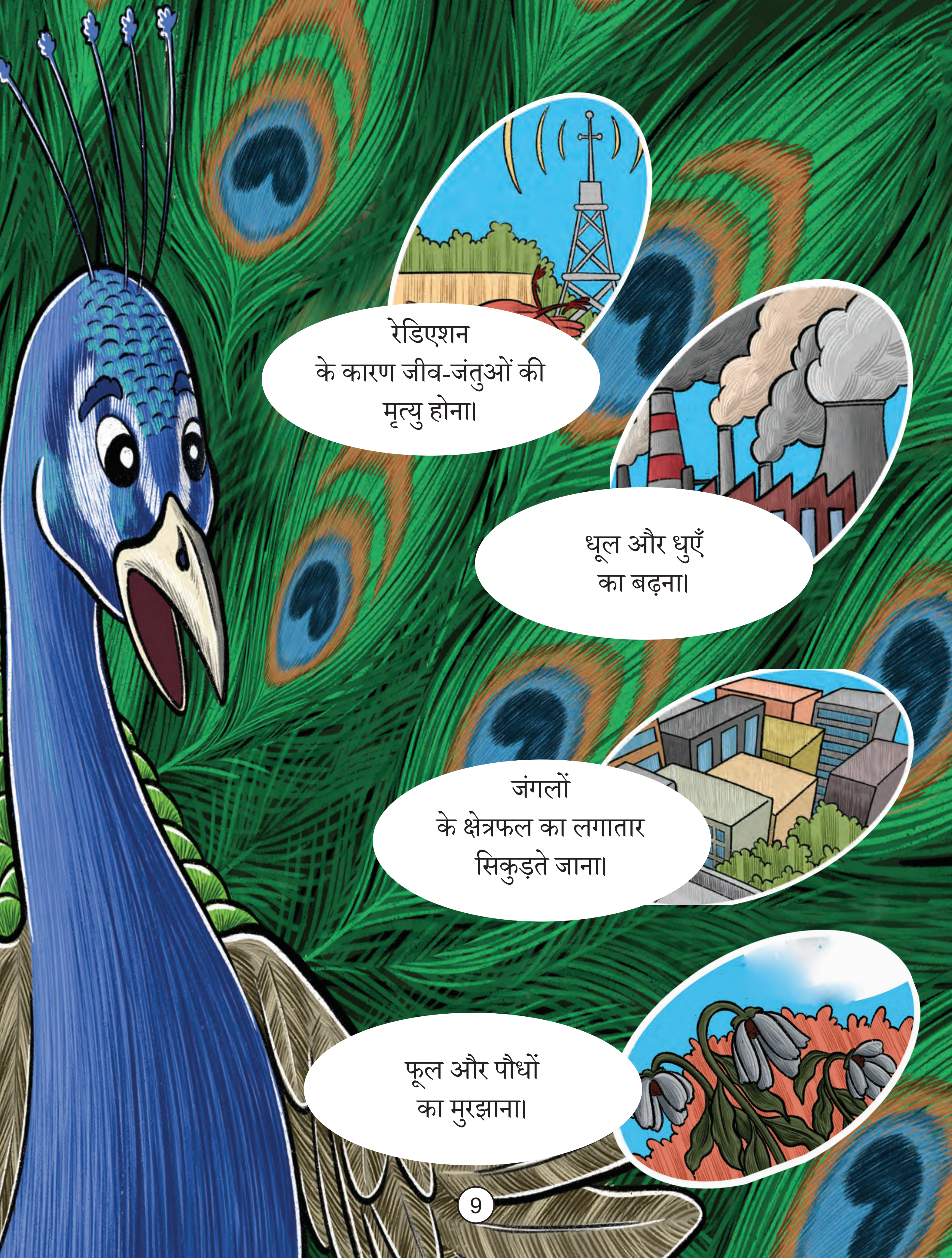
रेडिएशन के कारण जीव-जंतुओं की मृत्यु होना।
धूल और धुएँ का बढ़ना।
जंगलों के क्षेत्रफल का लगातार सिकुड़ते जाना।
फूल और पौधों का मुरझाना।

आप मेरी बात सुनिए। सड़क और कंक्रीट के फ़र्श पर चलना लोहे के चने चबाने जैसा है।
मैंने सुना था कि जीव दो प्रकार के होते हैं— जूते पहनने वाले और जूते ना पहनने वाले।
और मुझे लगता था कि मैं दूसरे प्रकार के जीवों में आता हूँ।
लेकिन देखो, इन इंसानों ने मुझे भी जूते पहना दिए।

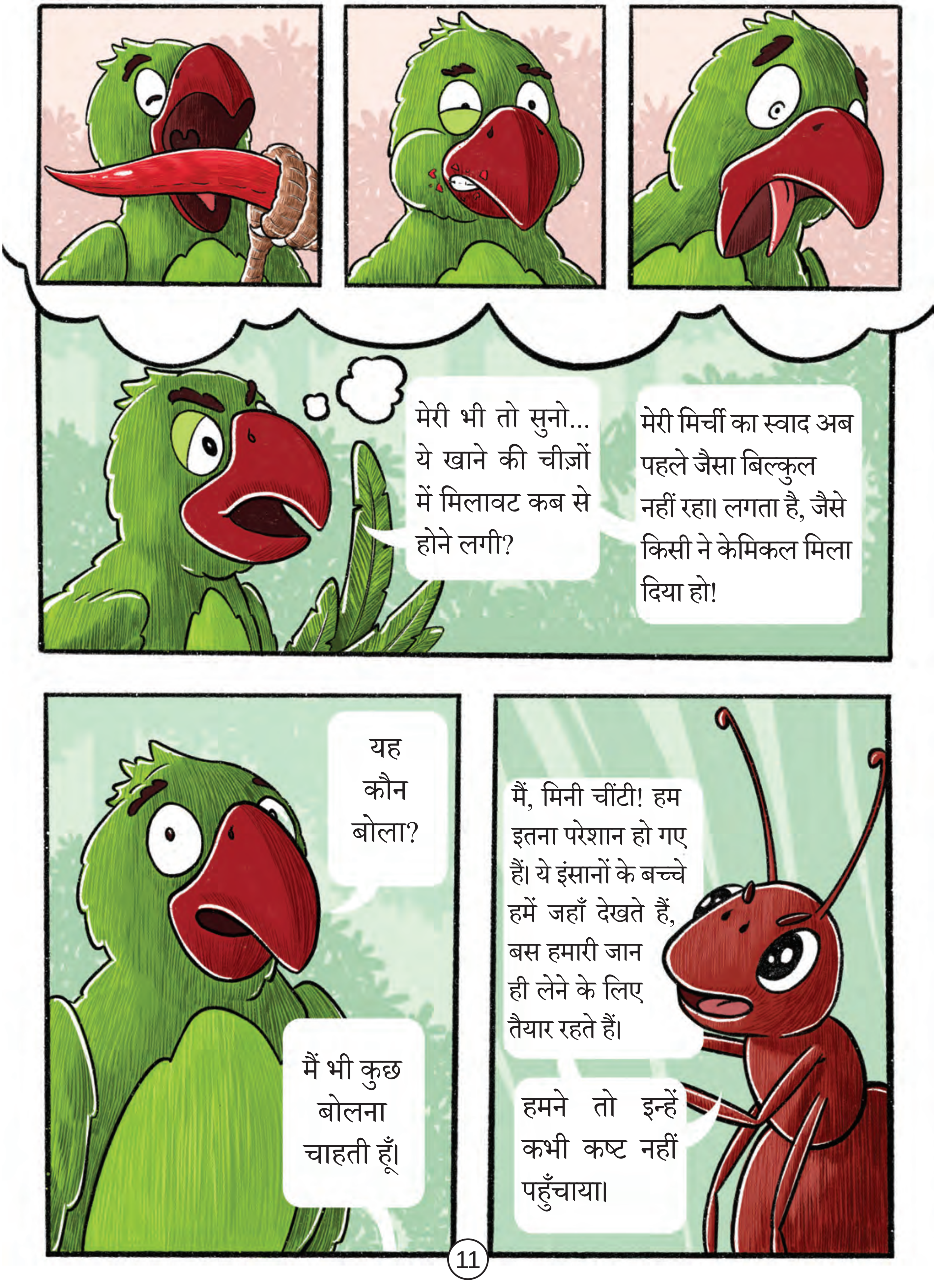
मेरी भी तो सुनो... ये खाने की चीज़ों में मिलावट कब से होने लगी?
मेरी मिर्ची का स्वाद अब पहले जैसा बिल्कुल नहीं रहा। लगता है, जैसे किसी ने केमिकल मिला दिया हो!
यह कौन बोला?
मैं भी कुछ बोलना चाहती हूँ।
मैं, मिनी चींटी! हम इतना परेशान हो गए हैं। ये इंसानों के बच्चे हमें जहाँ देखते हैं, बस हमारी जान ही लेने के लिए तैयार रहते हैं।
हमने तो इन्हें कभी कष्ट नहीं पहुँचाया।

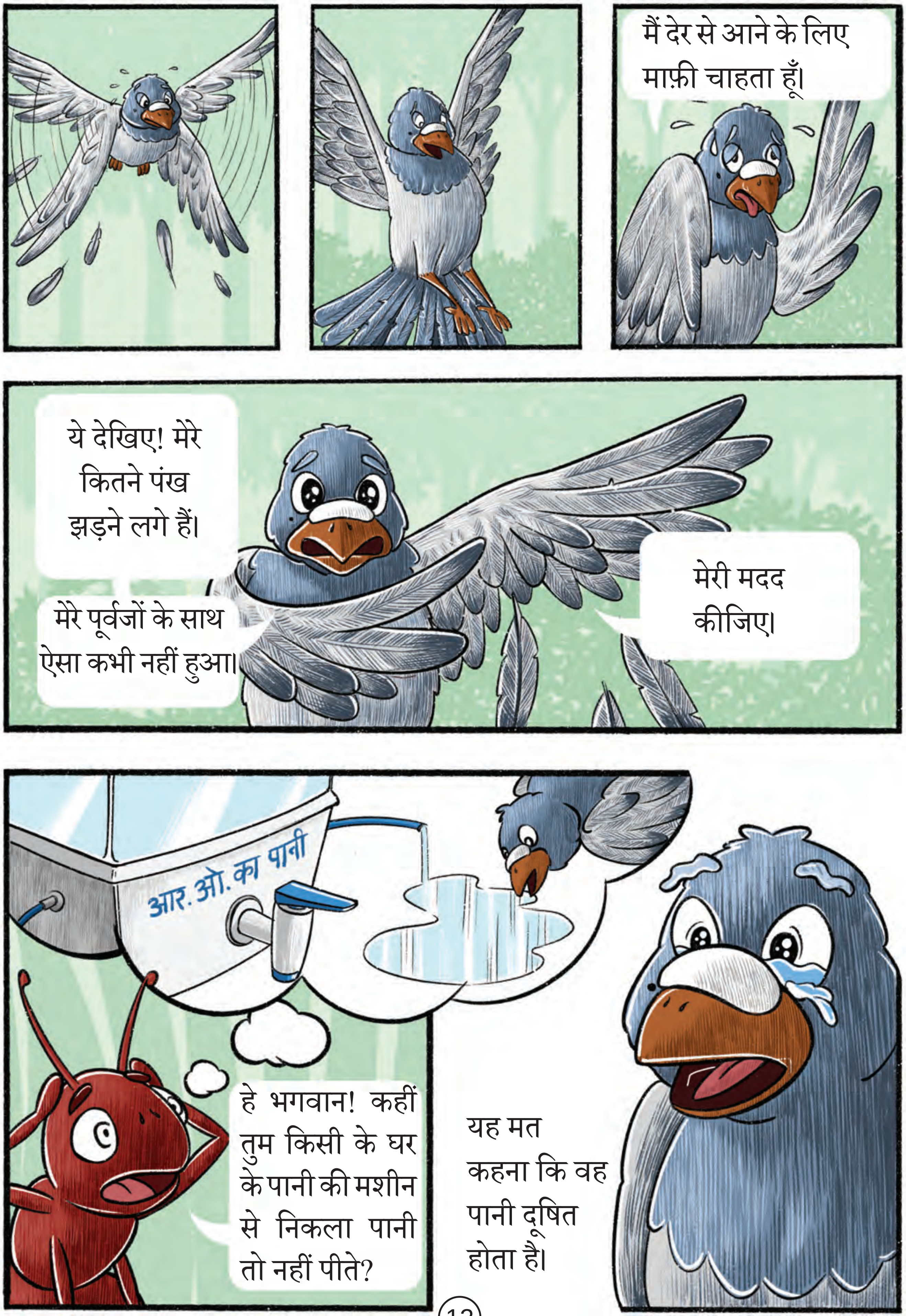

मैं देर से आने के लिए माफ़ी चाहता हूँ।
ये देखिए! मेरे कितने पंख झड़ने लगे हैं।
मेरे पूर्वजों के साथ ऐसा कभी नहीं हुआ।
मेरी मदद कीजिए।
आर.ओ. का पानी
हे भगवान! कहीं तुम किसी के घर के पानी की मशीन से निकला पानी तो नहीं पीते?
यह मत कहना कि वह पानी दूषित होता है।

सब अपनी समस्याएँ बता रहे हैं और तुम सब पीछे सो रहे हो!
साथियो, यह बहुत ही गंभीर मुद्दा है। हमें इस पर गहराई से विचार करना होगा।
मैं प्रस्तावित करता हूँ कि इस विषय पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की जाए और उसमें दुनियाभर के विद्वानों को बुलाया जाए।
साथ ही, मनुष्यों को भी बातचीत के लिए आमंत्रित किया जाए।
और इसके साथ ही मुन्नू घोंघे के धन्यवाद प्रस्ताव के बाद मीटिंग खत्म हो गई।
आभार

सा विद्या या विमुक्तये

CELL FOR NATIONAL CENTRE FOR LITERACY

राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र–प्रकोष्ठ

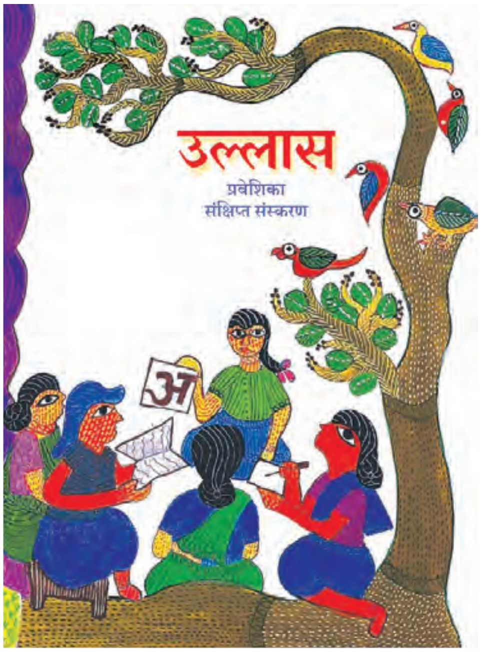

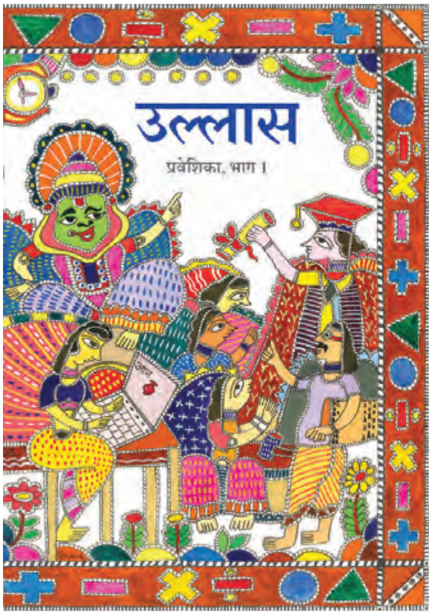

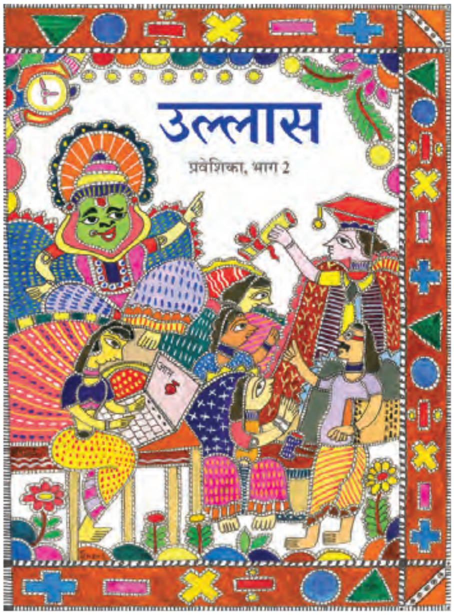

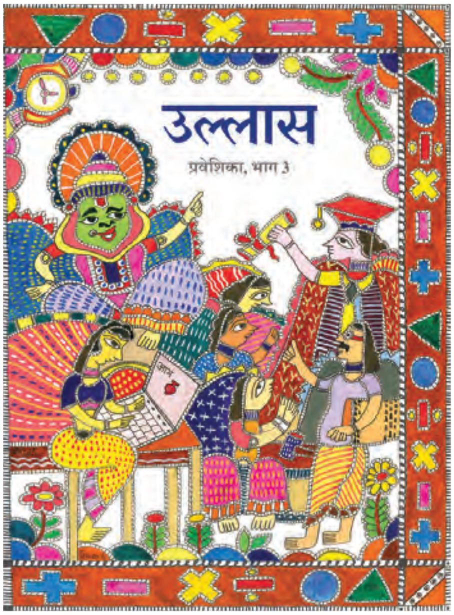

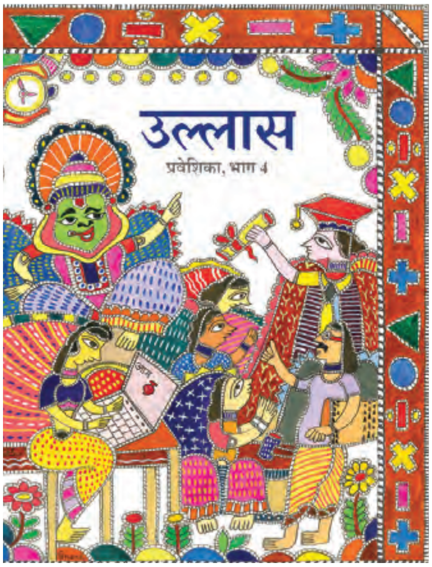

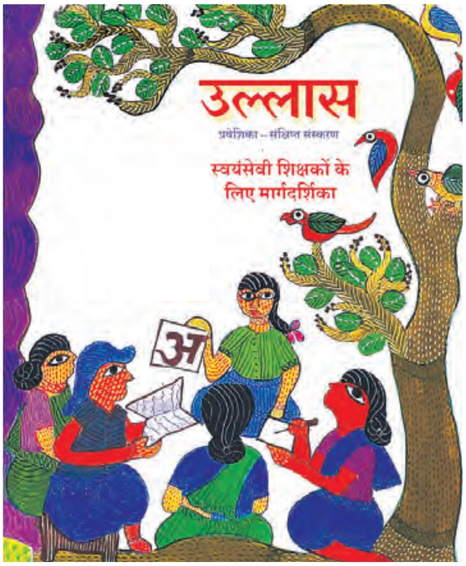

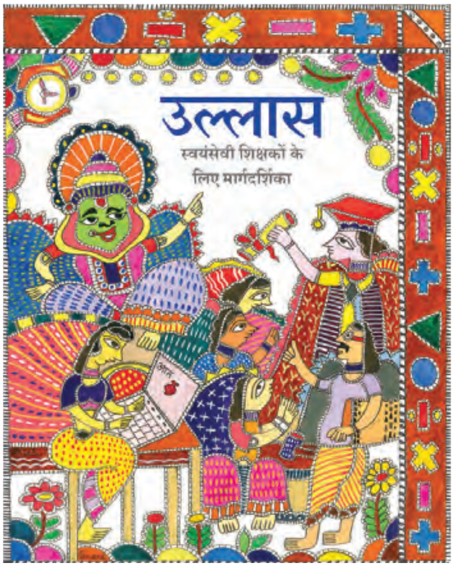

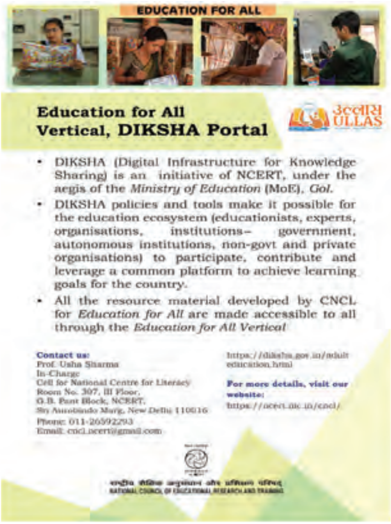

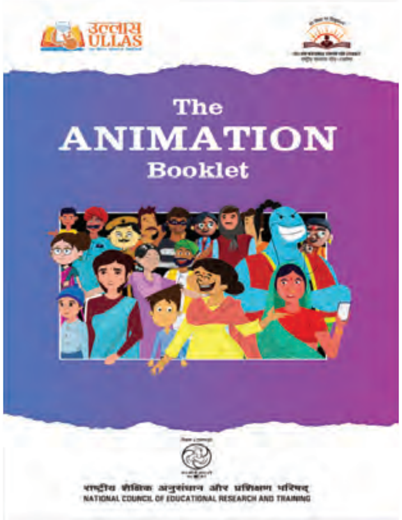

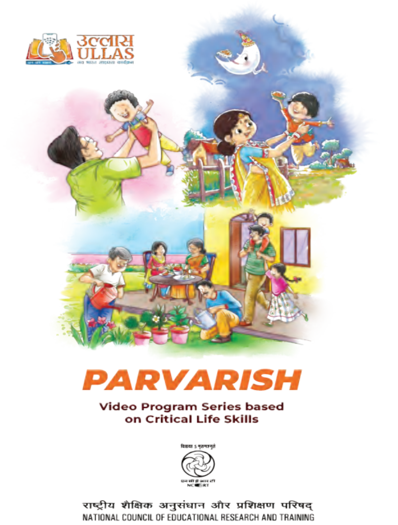

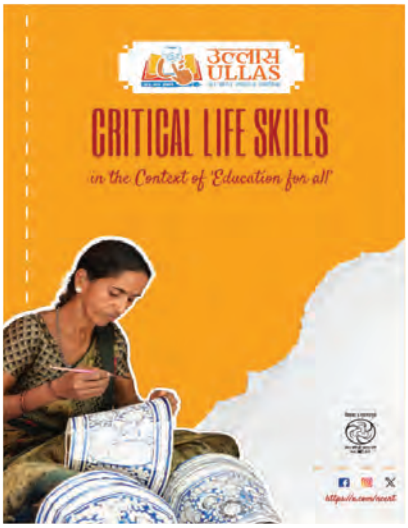

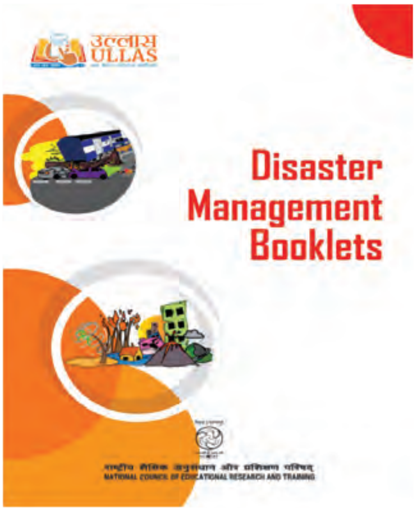

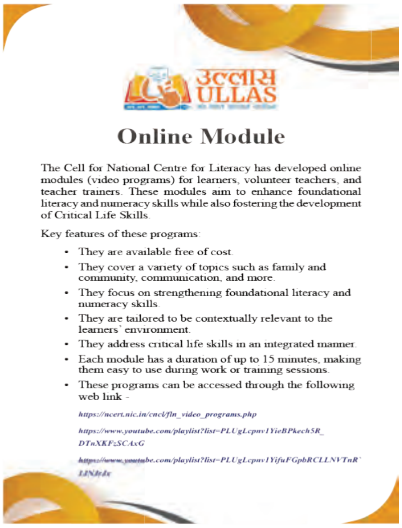

DIKSHA (Education for All Vertical)

https://diksha.gov.in/adult-education.html

CNCL Website

https://ncert.nic.in/cncl/

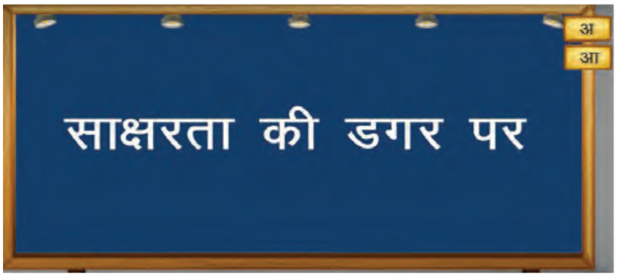
अ
आ
साक्षरता की डगर पर

उल्लास
ULLAS
“स्वास्थ्य एवं स्वच्छता”
महत्वपूर्ण जीवन कौशल | स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

उल्लास
ULLAS
“सफाई है ज़रूरी”
महत्वपूर्ण जीवन कौशल । स्वास्थ्य और स्वच्छता

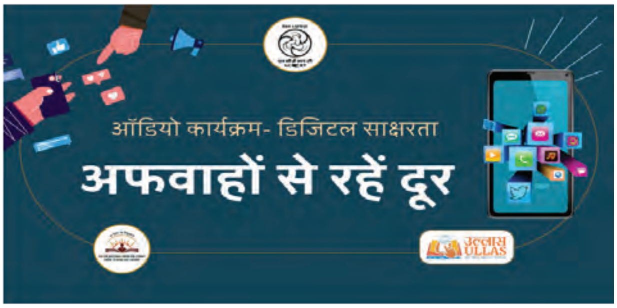
ऑडियो कार्यक्रम- डिजिटल साक्षरता
अफवाहों से रहें दूर
उल्लास
ULLAS

उल्लास
ULLAS
“बाढ़”
महत्वपूर्ण जीवन कौशल | आपदा प्रबंधन

उल्लास
ULLAS
“पृथ्वी हमारा घर”
महत्वपूर्ण जीवन कौशल | पर्यावरण संरक्षण

परवरिश

उल्लास
ULLAS
“फ़ोन हुआ चोरी
तो ये काम है ज़रूरी”
महत्वपूर्ण जीवन कौशल | डिजिटल साक्षरता

उल्लास
ULLAS
“समझदार बिटिया ”
महत्वपूर्ण जीवन कौशल | आपदा प्रबंधन

उल्लास
ULLAS
“डिजिटल दीदी”
महत्वपूर्ण जीवन कौशल । डिजिटल साक्षरता

महत्वपूर्ण जीवन-कौशल पर आधारित

कथा श्रृंखला

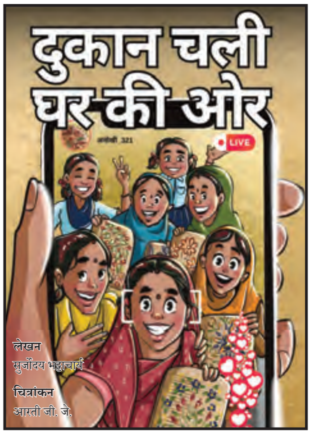

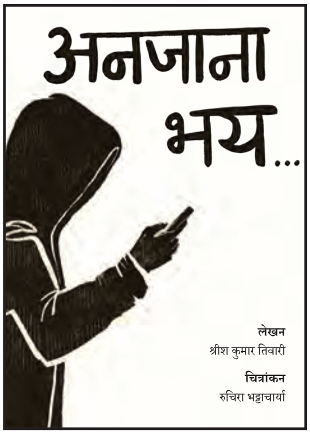

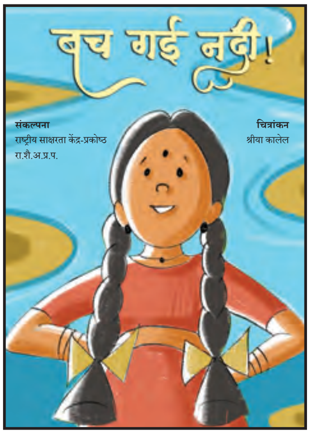

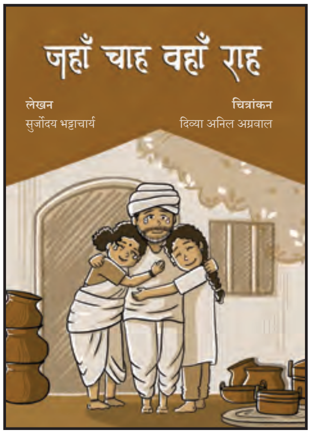

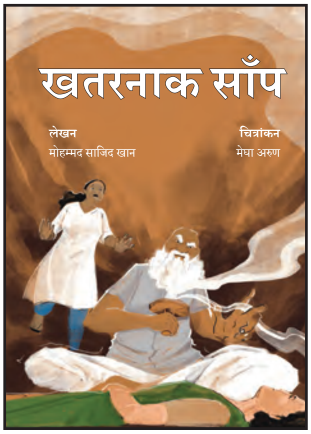

राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय
आपका डिजिटल पुस्तकालय!
असंख्य वृत्तांत प्राप्त करने
के लिए स्कैन एवं डाउनलोड करें।

21242

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5729-407-2